



Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 16 जनवरी, 2023

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग स्थापना दविस

15 जनवरी, 2023 को भारतीय मौसम विज्ञान विभाग का **148वाँ स्थापना दविस** मनाया गया। इस दविस को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा मनाया जाता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की स्थापना **वर्ष 1875** में हुई थी। इसका मुख्यालय **नई दिल्ली** में स्थित है। यह भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (Ministry of Earth Science- MoES) के अधीन कार्य करता है। यह मौसम संबंधी अवलोकन, मौसम पूर्वानुमान और भूकंप विज्ञान के लिये ज़रिमिदार प्रमुख एजेंसी है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की पाँच वेधशालाओं को विश्व मौसम विज्ञान संगठन से मान्यता प्राप्त है, ये वेधशालाएँ चेन्नई, मुंबई, पुणे, त्रिवनंतपुरम और पंजमि में स्थित हैं। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने लगातार नए अनुप्रयोग और सेवा के क्षेत्रों में कदम रखा है तथा 140 वर्षों के इतिहास में अपने इंफ्रास्ट्रक्चर को लगातार नरिमति किया है। इसने भारत में मौसम विज्ञान और वायुमंडलीय विज्ञान के विकास को एक साथ विकसित किया है। वर्तमान में भारत में मौसम विज्ञान एक रोमांचक भविष्य की दहलीज पर है।

विश्व आर्थिक मंच की वार्षिक बैठक

विश्व आर्थिक मंच की **53वीं बैठक** का आयोजन **16 जनवरी से स्वटिज़रलैंड के दावोस** में हो रहा है। यह बैठक **20 जनवरी तक चलेगी**। इस वर्ष की बैठक का **विषय है- खंडित विश्व में सहयोग (Cooperation in a Fragmented World)**। इसके तहत शिक्षाविद्, नविशक, राजनीतिक और व्यापारिक नेताओं द्वारा विश्व के समक्ष चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। प्रमुख विषयों में **रूस-यूक्रेन संकट, वैश्विक मुद्रास्फीति और जलवायु परिवर्तन** शामिल हैं, साथ ही मौजूदा वैश्विक आर्थिक स्थिति पर भी विचार किया जाएगा। इस बैठक में **भाग लेने वाले विश्व के नेताओं में यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वोन डेर लेन, जर्मन चांसलर ओलाफ शोलज़, यूरोपीय संसद के अध्यक्ष रोबर्टा मेटसोला** सहित कई देशों के शासनाध्यक्ष तथा अन्य नेता शामिल होंगे।

भारत का 75वाँ सेना दविस

भारतीय सेना ने **15 जनवरी** को हैदराबाद के परेड ग्राउंड में **75वाँ सेना दविस** मनाया। वर्ष 1949 में आज ही के दिन फील्ड मार्शल **के.एम. करयिप्पा** ने अपने **ब्रिटिश पूर्ववर्ती (जनरल सर फ्रांसिस बुचर)** की जगह **भारतीय सेना के पहले भारतीय कमांडर-इन-चीफ के रूप में पदभार संभाला**। फील्ड मार्शल (पहले **सैम मानेकशाँ थै**) की **पाँच सतारारैंक** वाले केवल दो सेना अधिकारियों में से जनरल करयिप्पा दूसरे थे। यह दिन देश के उन सैनिकों के सम्मान में मनाया जाता है, जिन्होंने नसि्वार्थ सेवा और भाईचारे की मसाल पेश की है।

नोट- सेना दविस 14 जनवरी को मनाए जाने वाले **सेवानवित्त सेना दविस** से अलग है, जो फील्ड मार्शल के.एम. करयिप्पा की औपचारिक सेवानवित्त का प्रतीक है।

और पढ़ें.. [भारतीय सेना दविस](#)

हमिसखलन

ज़ोजला सुरंग परियोजना पर काम चल रहे क्षेत्र में हाल ही में कश्मीर में **हमिसखलन की अनेकों घटनाएँ देखी गई हैं**। अधिकारियों ने **11 ज़िलों के लिये "कम स्तर के खतरे"** के साथ हमिसखलन की चेतावनी जारी की है। हिमि, बर्फ और चट्टानों के समूह जब तेज़ी से पहाड़ से नीचे गरिते हैं, इसे हमिसखलन कहा जाता है। चट्टानों या मट्टी के खलन को अक्सर **भूखलन** कहा जाता है। **90% हमिसखलन आपदाएँ मानवीय गतिविधियों के कारण ट्रिगर होती हैं**; उनमें से ज़्यादातर स्कीईंग करने वाले, परवतारोही और स्नो-मोबाइलर्स (बर्फ़ीले क्षेत्रों में यात्रा के लिये डिज़ाइन किया गया एक मोटर चालित वाहन एवं इनका अत्यधिक उपयोग करने वाले) शामिल हैं। हमिसखलन घातक होता है तथा इसके संबंध में कोई पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता है।



//

और पढ़ें... [जोजला सुरंग परियोजना](#)

व्यापार विश्वास सूचकांक

CII बिज़नेस कॉन्फिडेंस इंडेक्स (अक्टूबर-दिसंबर 2022 तमिाही के लिये) लगभग 2 वर्षों में अपने उच्चतम स्तर 67.6 (पछिली तमिाही में 62.2 से) पर पहुँच गया, जो बढ़ती वैश्विक आर्थिक अनश्चितताओं के चलते भी भारत के सुरक्षात्मक क्रम पर होने की उम्मीद को दर्शाता है। [OECD](#) के अनुसार, एक बिज़नेस कॉन्फिडेंस इंडेक्स उद्योग क्षेत्र में तैयार माल के उत्पादन, ऑर्डर और स्टॉक में विकास पर राय हेतु सर्वेक्षणों के आधार पर भविष्य के विकास की जानकारी प्रदान करता है। CII (भारतीय उद्योग परिसंघ) एक गैर-सरकारी, गैर-लाभकारी, उद्योगों का नेतृत्व करने वाला तथा उद्योग-प्रबंधन संगठन है। इसकी स्थापना 1895 में हुई थी एवं इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।

और पढ़ें... [भारतीय उद्योग परिसंघ](#)

आक्रामक वृक्ष प्रजातियाँ

दिल्ली के राज्य EIA प्राधिकरण ने राज्य वन विभाग से 3 तेज़ी से बढ़ती आक्रामक वृक्ष प्रजातियों वलायती कीकर (*Prosopis Juliflora*), सुबाबुल (River Tamarind) और यूकेलपिटस को रोकने तथा नष्ट करने के लिये कदम उठाने हेतु कहा है क्योंकि वे स्थानीय पारस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। वलायती कीकर वर्ष 1930 के दशक में अंग्रेज़ों द्वारा लाई गई मैक्सिकन आक्रामक प्रजाति सबसे हानिकारक है। यह दिल्ली रज़ि पर दिखाई देने वाली वनस्पतिका एकमात्र रूप है। ऑस्ट्रेलिया से आया यूकेलपिटस प्रकृति में आक्रामक नहीं है, लेकिन बहुत अधिक जल का उपयोग करता है क्योंकि यह तेज़ी से बढ़ने वाला वृक्ष है। यह एलोपैथिक प्रभाव भी दिखाता है (योगियों को छोड़ता है जो आस-पास की अन्य देशी प्रजातियों की वृद्धि में बाधक बनते हैं)। सुबाबुल भी मेक्सिको से आया है और वन विभाग द्वारा ईंधन एवं चारे के लिये पेश किया गया था। तीनों प्रजातियाँ भुजल स्तर को कम कर रही हैं।

और पढ़ें... [पर्यावरण प्रभाव आकलन \(EIA\), आक्रामक प्रजातियाँ](#)

